प्रसार प्रपत्र:117/2018

कृषि विज्ञान केन्द्र बागेश्वर
एक परिचय

भाकृअनुप
ICAR

कृषि विज्ञान केन्द्र
भाकृअनुप-विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान
काफलीगैर-263628, बागेश्वर (उत्तराखण्ड)

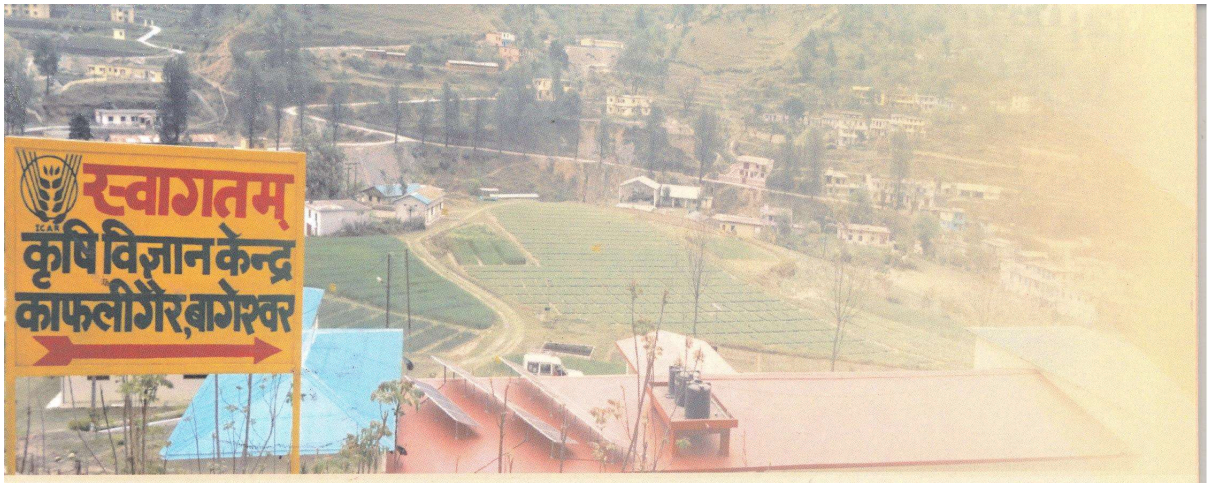

परिचय

कृषि विज्ञान केन्द्र (के.वी.के.) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, द्वारा प्रदत्त वह ईकाई है जिसके माध्यम् से कृषको को कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण द्वारा नई उत्पादन व प्रबन्धन तकनीकी का ज्ञान देने के साथ ही उन्हें इन तकनीकों को अपनाने हेतु प्रेरित किया जाता है। इसके अतिरिक्त इन केन्द्रों द्वारा प्रसार कार्यकर्ताओं, कृषक समूहों तथा विभिन्न कृषि आधारित संस्थानों को ज्ञान पूरक प्रशिक्षण दिया जाता है।

स्थापना एवं विकास

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के सौजन्य से विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा द्वारा बागेश्वर जनपद में कृषि एवं सम्बन्धित विषयों की नवीनतम् तकनीकों के प्रचार एवं प्रसार द्वारा जनपद के सर्वांगीण विकास हेतु अप्रैल 2007 में कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना की गयी। यह केन्द्र, अल्मोड़ा बागेश्वर राष्ट्रीय राजमार्ग 309A पर काफलीगैर नामक स्थान पर अल्मोड़ा से 45 कि0मी0 एवं बागेश्वर से 30 कि0मी0 की दूरी पर स्थित है। इस स्थान की समुद्रतल से ऊँचाई 1245 मीटर है। यह स्थान 29°45' 07'' उत्तर अक्षांश व 79°44'32'' पूरब देशान्तर में स्थित है। अपनी स्थापना से ही कृषि विज्ञान केन्द्र बागेश्वर कृषकों की सेवा में सदा तत्पर है। केन्द्र के समस्त तकनीकी हस्तांतरण कार्यक्रम **करके सीखो के सिद्धान्त** पर संचालित किए जाते है एवं प्रौद्योगिकी में निहित वास्तविक दक्षता को सिखाने पर अधिक जोर दिया जाता है। केन्द्र के कार्यक्रमों को सुचारू रूप से संचालन हेतु एक कार्यक्रम समन्वयक/वरिष्ठ वैज्ञानिक व अध्यक्ष, छः विषय वस्तु विशेषज्ञ –फसल उत्पादन, औद्यानिकी, पौध सुरक्षा, पशु विज्ञान, कृषि प्रसार एवं गृह विज्ञान (प्रत्येक विषय से एक), एक कार्यालय सहायक, एक प्रक्षेत्र प्रबन्धक, एक प्रशिक्षण सहायक एवं लैब तकनीशियन, एक आशुलिपिक, एक कार्यक्रम सहायक कम्प्यूटर, दो वाहन चालक तथा दो कुशल सहायक सहित कर्मचारियों की संख्या 16 स्वीकृत है। कुल 7.85 हैक्टेयर क्षेत्रफल में स्थित इस केन्द्र में कार्यालय भवन, पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र, कृषक आवास, सुसजित प्रशिक्षण कक्ष इत्यादि है। कुल 5 हेक्टेयर भूमि में यहां उन्नत फसल, फल एवं चारा उत्पादन तकनीकों के प्रदर्शनों के अलावा पॉलीहाउस, वर्मीकम्पोस्ट पिट, लघु डेयरी प्रदर्शन ईकाई, थ्रैसिंग फ्लोर तथा उन्नत कृषि यंत्र, मृदा प्रयोगशाला एवं गृह विज्ञान प्रयोगशाला भी है। कार्यालय सम्बन्धी कार्य सुगमतापूर्वक सम्पन्न करने हेतु 5 किलोवाट के सोलर संयंत्र, 4 कम्प्यूटर प्रिंटर सहित, 1 फोटोकॉपी मशीन, 1 डिजीटल कैमरा, 4 रेफ्रिजरेटर, प्रदर्शन सामग्री, परिवहन हेतु एक बोलेरो जीप, एक मोटर साइकिल तथा कृषि कार्यो हेतु एक ट्रैक्टर एवं पॉवर टिलर के साथ–साथ कृषक प्रशिक्षण हेतु केन्द्र पूर्णरूप से सर्वसाधन सम्पन्न है। केन्द्र पर 20 किसानों के ठहरने की भी उचित व्यवस्था है।

मुख्य उद्देश्य (Main objectives)

- स्थान विशेष हेतु तकनीकी को सुधारने एवं उसके दस्तावेजीकरण हेतु कृषकों की क्रियाशील सहभागिता द्वारा उनके ही खेतों पर परीक्षण करना।
- विभिन्न फसलों पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों के माध्यम से उत्पादन आंकड़े व कृषकों के अनुभवों को एकत्र करना।
- कृषकों, कृषक महिलाओं व ग्रामीण युवाओं हेतु कृषि पूरक व्यवसायों से सम्बन्धित ज्ञान पूरक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराना।

- कृषि शोध में हुई प्रगति को नियमित रूप से प्रसार कार्यकर्ताओं तक पहुँचाने हेतु प्रशिक्षण आयोजित करना।

विशिष्ट उद्देश्य

- कृषि, औद्यानिकी, पशु विज्ञान व पौध सुरक्षा आदि के लिए तकनीकी सहायता प्रदान कर जनपद में खाद्यान्न, सब्जियों व दूध के उत्पादन को बढ़ाना।
- विशेषाधिकार के तहत कृषि उत्पादन व दूसरे सम्बद्ध उद्यमों के द्वारा कृषकों के सामाजिक एवं आर्थिक स्तर को सुधारना।
- बीज, पौध सामग्री व अन्य साधनों, जैसे – यंत्र, उर्वरक, कीटनाशी की उपलब्धता को कृषि सेवा केन्द्र के माध्यम् से बढ़ाना।

केन्द्र के प्रमुख क्रियाकलाप

1. प्रशिक्षण कार्यक्रम (Training Programmes)

कृषि विज्ञान केन्द्र विभिन्न विषयों नामतः फसल उत्पादन, उद्यान विज्ञान, पादप सुरक्षा, पशु विज्ञान, गृह विज्ञान तथा कृषि प्रसार आदि पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों को प्रशिक्षण स्थान के आधार पर दो प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है। प्रथम कृषि विज्ञान केन्द्र पर आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रम जिनमें केन्द्र पर उपलब्ध एवं विकसित तकनीकों पर आधारित प्रशिक्षण होते है। दूसरे प्रकार के प्रशिक्षण केन्द्र से बाहर कृषक प्रक्षेत्रों पर ही उपलब्ध संसाधनों एवं फसलों के प्रबन्धन आदि पर आधारित होते हैं। प्रशिक्षणों में कृषकों का ध्यान आकर्षित करने तथा विषय वस्तु को आसानी से समझाने हेतु चलचित्र, पावर प्वाइंट प्रेजेन्टेशन, फोटोग्राफ, यंत्रों के साथ–साथ स्थानीय एवं साधारण भाषा शैली का प्रयोग किया जाता है। कृषकों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये विशिष्ट तकनीकों जैसे– मशरूम उत्पादन, खाद्य प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, बगीचों में कॉट–छॉट, सब्जियों की संरक्षित खेती, बेमौसमी सब्जी उत्पादन, जैविक खेती, उन्नत पशुपालन, पशुओं के पोषण एवं रोग प्रबन्धन, सान्द्र पशु आहार बनाने, हरे चारे का उत्पादन बढ़ाने आदि का प्रशिक्षण **करके सीखों सिद्धान्त के माध्यम्** से भी दिया जाता है।

2. अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (Front Line Demonstrations)

कृषि के क्षेत्र में नवीनतम् विकसित तकनीकों एवं प्रजातियों के प्रति कृषकों के मन में विश्वास जगाने तथा तकनीकों एवं प्रजातियों की क्षेत्रीय अनुकूलता एवं पुरानी पद्धतियों के सापेक्ष श्रेष्ठता जानने के उद्देश्य से अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन कृषक प्रक्षेत्रों पर किया जाता है। अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन कृषि विज्ञान केन्द्र का वह माध्यम् है जिसके द्वारा विषय वस्तु विशेषज्ञों की पहुँच सीधे कृषक प्रक्षेत्र से हो पाती है। समय–समय पर विशेषज्ञों द्वारा प्रदर्शनी के निरीक्षण हेतु प्रक्षेत्र भ्रमण किये जाते हैं जिसमें विशेषज्ञों एवं कृषकों के बीच विचारों का आदान–प्रदान होता है और कृषि विज्ञान केन्द्र एवं कृषकों के बीच सशक्त सम्बन्ध एवं संवाद स्थापित होता है।

3. अनुकरणीय परीक्षण (On-Farm Trials)

कृषि के क्षेत्र में विभिन्न संस्थानों, विश्वविद्यालयों में हो रहे शोध कार्यो की उपयोगिता अपने सामाजिक – आर्थिक एवं जलवायुवीय क्षेत्र में जानकर कृषकों की समस्याओं के निदान हेतु तकनीकी विकसित करने के उद्देश्य से अनुकरणीय परीक्षणों का आयोजन कृषक प्रक्षेत्रों पर किया जाता है। इससे मिले परिणाम को आगे परिष्कृत करके अग्रिम पंक्ति प्रर्दशनों की योजना बनाने तथा तकनीकी के विस्तार में भी सहायक सिद्ध होते हैं।

4. बीज उत्पादन कार्यक्रम

केन्द्र द्वारा विकसित उन्नत प्रजातियों के सत्यापित बीजों का उत्पादन कर उसे कृषकों को प्रदर्शन के माध्यम से उपलब्ध कराया जाता है।

5. प्रक्षेत्र दिवस/प्रदर्शनी/शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, कृषक के प्रक्षेत्र पर अग्रिम पंक्ति प्रर्दशनों के माध्यम से लगे फसलों के उत्पादन के जानकारी को अन्य किसानों तक फैलाने के लिए प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन करता रहता है तथा इसके अलावा जिले में होने वाली विभिन्न प्रदर्शनियों में विकसित तकनीकों का प्रदर्शन स्टॉल के माध्यम से किया जाता है।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति (Scientific Advisory Committee)

किसी भी संस्था के सफल क्रियाकलापों के लिये भावी कार्यो की पूर्ववर्ती योजना एवं पूर्व में किये गये कार्यो के परिणामों का दस्तावेजीकरण एवं विचारविमर्श आवश्यक है। इन कार्यो हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के निर्देशों के आधार पर प्रतिवर्ष एक वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक आयोजित करता है। उक्त समिति के अध्यक्ष निदेशक, भाकृअनुप–वि.प.कृ.अनु.सं. अल्मोड़ा है। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में जिलाधिकारी, बागेश्वर को आमन्त्रित किया जाता है। समिति के सदस्य के रूप में वि.प.कृ.अनु.सं. के प्रधान एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक, निकटवर्ती भा.कृ.अनु.प.के प्रधान वैज्ञानिक, बागेश्वर जनपद के कृषि, उद्यान, पशुपालन एवं सम्बन्धित रेखीय विभागों के जिलास्तरीय अधिकारी नामित हैं। चार प्रगतिशील कृषक भी समिति के सदस्य होते हैं, जबकि कार्यक्रम समन्यवयक सदस्य सचिव की भूमिका निभाते हैं।

के.वी.के. काफलीगैर द्वारा संपादित मुख्य क्रियाकलाप का संक्षिप्त विवरण (वर्ष 2007–08 से 2017–18)

वर्ष	अनुकरणी परीक्षण		अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन		प्रशिक्षण कार्यक्रम		अन्य प्रसार कार्यक्रम			बीज उत्पादन (कु0)	सब्जी पौध उत्पादन (संख्या)
	संख्या	लाभार्थी	क्षेत्रफल (हे0)	चूजे	लाभार्थी	संख्या	लाभार्थी	संख्या	लाभार्थी		
2007–08	4	20	19.53	0	520	11	287	6	230	12.00	2000
2008–09	7	70	45.53	500	1169	52	1310	478	8428	22.00	15890
2009–10	5	25	36.88	1000	1165	88	2006	477	11920	25.95	45390
2010–11	5	40	27.66	600	726	93	2144	386	10798	29.38	115180
2011–12	2	10	55.45	600	2295	88	2068	299	4112	24.42	77290
2012–13	4	25	107.54	600	3099	70	1664	492	8019	25.47	117587
2013–14	7	47	51.97	500	2087	79	1838	1677	11345	20.99	102125
2014–15	8	64	42.59	500	2161	77	1738	1438	6185	24.88	114000
2015–16	7	56	34.85	500	1526	47	1065	4893	19558	35.00	17690
2016–17	6	52	55.10	500	1555	55	1534	4052	13104	46.34	150000
2017–18	5	52	50.44	600	1613	46	1276	4577	10803	37.16	134249

भावी रणनीति (Future Plan)

- उच्च गुणवत्ता व उत्पादन क्षमता वाली फल सब्जियों की नई प्रजातियों को केन्द्र की विभिन्न प्रसार गतिविधियों में समाविष्ट करना।
- खाद्यान्न व तिलहन की उच्च उत्पादन क्षमता वाली प्रजातियों को प्रदर्शन व प्रशिक्षण कार्यक्रमों में समाविष्ट करना।
- मशरूम एवं मधुमक्खी प्रदर्शन ईकाई की स्थापना।
- पशुधन विकास हेतु कुक्कुट शाला एवं बकरी शाला की स्थापना व प्रबन्धन।
- हरे चारे की उपलब्धता हेतु अजोला प्रदर्शन ईकाई की स्थापना।
- कृषक सेवा केन्द्र की स्थापना।
- पिछड़े क्षेत्रों के कृषक परिवारों को बागवानी प्रसार कार्यक्रमों हेतु अपनाना।
- ग्रामीण महिलाओं को आत्म निर्भर बनाने एवं स्वरोजगार उपलब्ध कराने हेतु गृह विज्ञान तकनीकी, जैसे खाद्य प्रसंस्करण, वस्त्र बुनाई, चित्रकारी, फल व सब्जी परिरक्षण आदि के दीर्घकालीन प्रशिक्षण आयोजित करना।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :
कार्यक्रम समन्वयक/ वरिष्ठ वैज्ञानिक
कृषि विज्ञान केन्द्र
भाकृअनुप-विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान
काफलीगैर-263628, बागेश्वर (उत्तराखण्ड)
दूरभाष/फैक्स: 05963-255150
ईमेल: kvkbageshwar@gmail.com
वेबसाइट: www.kvkbageshwar4.in

आलेख
एन. के. सिंह, के. के. पाण्डे, हरीश जोशी, एम. पी. सिंह एवं निधि सिंह

सम्पादन एवं टंकण सहयोग
श्रीमती रेनू सनवाल तथा श्रीमती जानकी मेहता

मुद्रण सहयोग
पी.एम.ई. सैल, भाकृअनुप- विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

निःशुल्क कृषक हैल्पलाइन सेवा: 1800 180 2311
सम्पर्क समय - प्रत्येक कार्य दिवस प्रातः 10.00 बजे से सांय 5.00 बजे तक

मुद्रित: वीनस प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, बी-62/8, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेस-II, नई दिल्ली-110028, दूरभाष : 45576780, मोबाईल : 9810089097